

पेरिस, फ़्रांस से बिक का फ़ोन

गर्मियों की उस दोपहर, मैंने पहाड़ों का रुख़ करने का फ़ैसला किया था।

उधर शहर में पारा 42 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच चुका था। सऊदी कालाब्रिया हमें याद दिला रहा था कि रेगिस्तान की गर्मी कैसी होती है। OPEC में हमें अभी दाख़िला नहीं मिला था, इटली अब भी हमें जाने देने से इनकार कर रहा था, और ब्रसेल्स हर दिन एक नया बिल थमाता रहता था, हर बिल एक नई क़ुर्बानी माँगता हुआ।

अपने दिन कैसे बिताता हूँ, इस पर सोचने से ख़ुद को रोक न पाकर, मैं हाल में घटी घटनाओं पर मुस्कुराया और सोचने लगा कि इंसान कितना नाज़ुक हो सकता है, कहानियों के भीतर, ख़यालों के भीतर, और अपने फ़ोन में सहेजे संदेशों को दोबारा पढ़ते हुए।

बिक फ़्रांस के पूरे बोर्ड को मेरे शहर से गए बस कुछ ही दिन हुए थे। शनेल उसके थोड़ी देर बाद रवाना हुई, और चौबीस घंटे से भी कम में उसने मुझे टेलीग्राम पर एक संदेश भेजा।

उसमें लिखा था:

“होटल वाली महिला ने मुझे आपका फ़ोन नंबर दिया। औरतें आपस में ऐसी छोटी-छोटी मेहरबानियाँ हमेशा करती रहती हैं। आपसे मिलकर मुझे सचमुच ख़ुशी हुई, और मुझे यह बात अच्छी लगी कि आपने वह नहीं किया जो ज़्यादातर मर्द आम तौर पर करते हैं। आपने मेरे दिमाग़ पर ध्यान दिया, सिर्फ़ मेरे जिस्म पर नहीं।

लेकिन एक औरत के नाते ईमानदारी से कहूँ, तो मेरा मानना है कि यह अंत नहीं है। यह कोई वादा नहीं है; यह उससे कहीं ज़्यादा है। और औरतें नामुमकिन चीज़ों का पीछा कभी नहीं छोड़तीं।

जल्द बात होगी।

चुंबन,

शनेल।”

मैं फ़ोन रखकर क़ुदरत में गुम होने ही वाला था कि एक और कॉल आ गई।

देश का कोड हमेशा वाला ही था।

+33। फ़्रांस।

शनेल मुझसे बात करना चाहती थी।

मैंने तुरंत जवाब नहीं दिया।

दरअसल, मैंने उसकी चौथी कोशिश पर ही फ़ोन उठाया, और हर कॉल पिछली के लगभग ठीक पाँच मिनट बाद आई थी।

मैं समझना चाहता था कि मामला सचमुच कितना फ़ौरी और अहम है, और यही इकलौती रणनीति थी जिससे मैं इसे ठीक से नाप सकता था।

यह उन राज़ों में से एक था जो माँ जिलेट ने मुझे सिखाए थे।

कभी अपनी पूरी उपलब्धता मत दो।

ख़ुद तक पहुँचना बहुत आसान मत बनाओ।

कुछ क़ीमती बन जाओ, लगभग एक बेशक़ीमती चीज़।

तभी तुम्हारी क़ीमत बढ़ेगी, और तभी लोग तुम्हें सही नज़र से देखेंगे।

आख़िरकार, जवाब देने की घड़ी आ ही गई।

वह झुँझलाई हुई लग रही थी और उसने फ़ौरन पूछा कि मैं कहाँ ग़ायब हो गया था।

बात अहम थी।

बात फ़ौरी थी।

हमें एक और मुलाक़ात करनी थी।

लेकिन इस बार, उसने कहा, वह सबसे ऊँचे स्तर पर होगी।

“कौन है?” मैंने पूछा। “वैटिकन से पोप?”

“नहीं,” उसने हँसते हुए जवाब दिया। “आप हमेशा वैसे के वैसे हैं।”

इस टिप्पणी से लगभग ऐसा लगा मानो वह मुझे पहले ही जान चुकी हो।

फिर वह आगे बोली।

“बिक में सबसे बड़ी हिस्सेदारी रखने वाला परिवार आपसे मिलना चाहता है। और अजीब बात है, मेरे लिए भी, कि वे सब औरतें हैं। कोई मर्द नहीं।”

“क्या आप पेरिस आएँगे?”

“मुझे देखना होगा कि जो ऊँट उपलब्ध है, वह कितने का पड़ता है,” मैंने जवाब दिया। “वैसे भी, आप जानती हैं कि मैं बहुत थोड़े में गुज़ारा करता हूँ।”

“मुझे पता था कि आप सिर्फ़ एक वजह से आएँगे,” उसने जवाब दिया।

“आपकी किताबें पढ़कर मुझे समझ आया कि आप औरतों को कभी ना नहीं कहते। यह नफ़ासत, अंदाज़ और क्लास की बात है। जो भी आपका लिखा पढ़ता है, उसे यह दिख जाता है।”

“कृपया मुझे शरमाने पर मजबूर मत कीजिए,” मैंने कहा। “ख़ासकर इसलिए कि फ़ोन पर आपको यह कभी दिखेगा भी नहीं। और आप ठीक-ठीक कब चाहती हैं कि मैं आऊँ?”

“जब आप चाहें। किसी अपॉइंटमेंट की ज़रूरत नहीं। वे आपसे शाँज़-एलीज़े के एक कैफ़े के भीतर मिलेंगी। आप जो चाहें पीने को मँगवा सकते हैं।”

“मैं इंतज़ाम करके आपको जल्द बताता हूँ।”

“अलविदा।”

“अलविदा।”

कॉल ख़त्म होने के बाद मैं देर तक सोचता रहा।

फिर भी कोई ख़याल कभी उस हक़ीक़त तक नहीं पहुँच सकता था जो असाधारण औरतों की तात्कालिक सूझ के भीतर बसी होती है।

फर्दिनांदो